परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

तक्ष शिला

हमार अगना

अंक 3 | अर्द्धवार्षिक | पूर्व-स्कूल एवं अनौपचारिक शिक्षा पर परिवर्तन के प्रयासों का संकलन, आँगनबाड़ी केन्द्रों के लिए | अगस्त 2016

बच्चों में बदलाव

रंजत कुमार :– जमापुर, – रंजत जब पहली बार परिवर्तन आया तो उसके साथ वाले सारे बच्चे खेल रहे थे। लेकिन रंजत नही खेल रहा था और रो रहा था। मैंने उसे बहुत चुप कराया लेकिन वो चुप नही हो पाया फिर मैंने वो, जिस केन्द्र से आया था, वहाँ की सेविका के पास फोन किया, ''आप अब से रंजत को यहाँ मत भेजिएगा'' लेकिन सेविका नही मानी, वह उसे ऐसे ही भेजती रही। बार–बार, आते आते उसने रोना बंद कर दिया। जब मैंने नन्हे कदम कार्यशाला करवाई तो कार्यशाला की शुरूआत रंजत से ही करवाई। उस समय उसके पापा भी वहाँ पर आये हुए थे। जब वो उसका बोलना देखे तो बोलने लगे ''पहले तो जब पढने के लिए बोला जाता था तो बस ये रोता ही था जबसे परिवर्तन गया इसका कंठ खुल गया।''

अनुसाशित बच्चे

सचिन कुमार (भरौली):– सचिन बहुत ही सुशील और मिलनसार लड़का है वह अपने दोस्त से झगड़ा भी नहीं करता है। उसका दोस्त उसको मार भी देता है तो वो कुछ नही बोलता है, उसके अलावा सचिन घर जाते समय जब

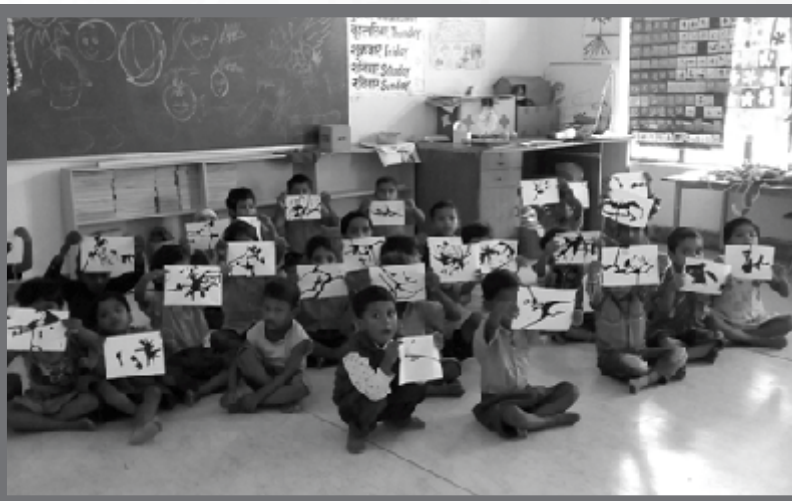

सारे बच्चे पानी पीकर ग्लास वहीं रख देते हैं, तो वो बालघर में जाकर हीं ग्लास रखता है उसके बाद ही घर जाता है।

सेविकाओं की सीख

आरती देवी (गोठी) :– मुझे परिवर्तन बहुत ही अच्छा लगा। जब मै घरौंदा गई तो मुझे पेंटिंग और मुखौटा बहुत ही अच्छा लगा। वहां पर मुझे एक नयी चीज देखने को मिली। कांच पेंटिंग, कांच पर वहाँ बहुत ही अच्छे से पेंटिंग किया गया था।

इन्दु देवी (जमापुर) :– जब मै परिवर्तन में गई तो वहाँ का वातावरण मुझे बहुत ही अच्छा लगा। वहाँ पर बच्चे जिस तरह से कविता–कहानी, एक्टिंग में कर रहे थे, तो मैंने इसके पहले ऐसे कभी बच्चों को करते हुए नहीं देखा था। यही मुझे यहाँ सबसे अच्छा लगा।

प्रेमशिला देवी (भरौली) :– मै तो परिवर्तन में बहुत बार आई हूँ लेकिन आज मै सेविका प्रशिक्षण में आई तो मुझे एक नयी जानकारी मिली उसमें, एक हजार दिन जो की गर्भ का समय होता है–,गर्भावस्था 270 दिन = 9 महीना 365 दिन = एक साल, इसकी जानकारी मिली जो की मेरे लिए एक नई सीख है।

कमला यादव (पथार) :– मै जब परिवर्तन नहीं आई थी तो सोचती थी कि आखिर बच्चे वहाँ इतना तेज कैसे हो जाते हैं? यहाँ पर हम लोग भी पढ़ाते हैं, फिर भी बच्चे तेज नहीं होते हैं। जब मैं यहाँ आई तो देखी की बच्चों को इतनी खुली आजादी कहीं नहीं मिलती है इसी लिए बच्चे यहाँ इतने तेज हो जाते हैं। यहाँ पर बच्चों को जो कुछ भी बताया जाता है वो सीख लेते हैं। इसके साथ–साथ मुझे यहाँ का साफ–सफाई बहुत ही अच्छा लगता है। इसी तरह जब जमापुर में नन्हे कदम कार्यशाला हुआ, तो पथार की महिला लोग बोल रही थी, ''परिवर्तन का काम तो बहुत ही अच्छा है इसके साथ– साथ वहाँ के लोगों का भी व्यवहार हम लोगों को बहुत पसंद आता है।''

सीता चौहान (जमापुर) :– मेरी सहायिका रूक्मीणा देवी बोल रही थी कि, ''परिवर्तन में बच्चों को जो कुछ भी बताया जाता है, वो मुझे बहुत ही अच्छा लगता है यहाँ आने के बाद मुझे यहाँ से जाने का मन ही नहीं करता है, यहाँ का हर चीज मुझे अच्छा लगता है। यहाँ आकर बच्चे जब जुगुसा व्ययाम करते हैं तो वो और भी अच्छा लगता है। यहाँ पर बच्चे कितना भी बदमासी करते हैं यहाँ पर उन लोगों को मारा नही जाता है, बोला भी नही जाता है।''

मीरा देवी (जीरादेई) :– मनीषा मेरे सेंटर से आती है। जब बालघर की छुट्टी हुई, तो सारे बच्चे घर जारहे थे, उसी समय कुछ बच्चे घास पर चल रहे थे, उसको देख कर एक फुलटूसी नाम की लड़की बोली ''आप लोग घास पर मत चलिए, नहीं चला जाता है मैडम जी बोली है।''

अचानक झूले की तेल खत्म

पूनम कुमारी (जीरादेई) :– पूनम 4 साल की है, यह संगीता जी के सेंटर से आती है। एक दिन की बात है, वह टायर ग्राउंड में झुला झूल रही थी झूलते – झूलते अचानक झूला रुक गया, तो वो अपनी दोस्त चुलबुली से बोलने लगी ''झूला का तेल खत्म हो गया है इसी लिए यह रुक गया है।'' उसके बाद एक दूसरी लड़की उसको आकर के हिलाने लगी तो पूनम बोलने लगी की, ''तेल पड़ गया, चलो अब तुम झूलो अब तेल खत्म नही होगा।''

बातों पर ध्यान दें

आसिया कुमारी (जमापुर) :– आसिया 5 साल की है, यह इन्दु जी के सेंटर से आती है। आसिया बहुत तेज और प्यारी बच्ची है। आसिया के साथ पांच बच्चे आते हैं, पाचों बच्चे आसिया के तरह ही तेज हैं। एक दिन आसिया जब छुट्टी के बाद घर जा रही थी, तो मैंने उससे पूछा कि, ''किस चीज के पत्ता से पूजा होता है आसिया बताओ, और हमलोग अपने घर के आंगन में किस का पौधा लगाते हैं?'' तो वो बोली ''नहीं पता है,'' तो मैं बोली, ''अपनी दादी से पूछ कर आना।'' वह बोली, ''ठीक है'' दूसरे दिन आसिया आते ही मुझे बताने लगी ''मैडम जी आंगन में तुलसी का पौधा लगाया जाता है और इसकी पूजा भी की जाती है।''

गंदगी फैल गई

बेबी कुमारी (जमापुर) :– यह जमापुर केन्द्र से आती है। मैं क्लास में एक कविता सुनाने लगी ''एक खबर है, देखो इसमें मक्खी रानी कितनी दूर तक गंदगी फैलाती है।'' तब बेबी बोलने लगी ''मैडम जी सबसे जादा गंदगी बच्चे लोग फैलाते हैं, कितना भी साफ किया जाता है, उन लोगों को वो लोग फिर गन्दा कर लेते हैं।''

ब्यूटी कुमारी (बाबु भटकन) :– यह परिवर्तन में धमाचौकड़ी कार्यशाला में आई थी। वह मुझसे बताने लगी कि ''मुझे आंगनबाड़ी पर अच्छा नहीं लगता है। मुझे परिवर्तन ही अच्छा लगता है। जब मैं केन्द्र पर जाती हूँ, तो मुझे जाने का मन ही नहीं करता है। मैं परिवर्तन जाने के लिए रोने लगती हूँ।''

व्यायाम में मस्ती

अंशिका कुमारी (जमापुर) :– अंशिका को जिस दिन परिवर्तन आना रहता है उस दिन वह खूब सुबह ही उठ जाती है और अपनी दादी से कहने लगती है ''आज मैं परिवर्तन जल्द जाउंगी।'' तो उसकी दादी पूछने लगी, ''क्यों,''

बालघर आंगन के संकल्पना एवं उद्देश्य

''मुझे वहाँ जाकर प्रार्थना, व्यायाम और जुगुसा करना है। मैडम जी बोली हैं कि तुम कल जल्दी से आना।''

बालघर आंगन की संकल्पना एवं उद्देश्य

बाल घर आंगन एक गतिविधि सेंटर है जिसमें 3–6 साल के बच्चों के साथ काम किया जाता है। इसमें अलग–अलग आंगनबाड़ी से बच्चे पढने आते हैं, प्रत्येक केन्द्र से पांच बच्चे आते हैं, जो यहाँ से जाने के बाद केन्द्र पर बाकी बच्चों को सिखाते हैं इसमें बहुत गतिविधि को कराया जाता है, जैसे – कविता, कहानी, बालगीत, गेम, व्यायाम, प्रार्थना बच्चों को एक्सन में करने के लिए कविता कहानी बताना। इसके साथ–साथ बच्चों में मानसिक और शारीरिक विकास भी होता है। बालघर आंगन एक प्रयास है जो बच्चों के लिए लाभकारी सिद्ध होता है। बालघर आंगन की शुरुआत मार्च 2014 में हुई थी। इसमें सबसे पहले नजदीक के चार केन्द्रों के साथ इसकी शुरुआत हुई, फिर धीरे – धीरे इसमें केन्द्रों की संख्या बढती गई। पहली बार 4 केन्द्र हुए, दूसरी बार 12, तीसरी बार 16, फिर 32। अभी तक इसमें 32 केन्द्रों के साथ काम हो चुका है। केन्द्र तथा गाँव का नाम–नरेन्द्रपुर, नारायनपुर, मियां–भटकन, खेम–भटकन, धर्मपुर, जमापुर, जीरादेई, गोठी, संजलपुर, पथार, संथू, बंथू, छियासी, बंथू सलोना, बाबु–भटकन, बडहुलिया, बडहुलिया हाता, भरौली, सिकिया, और इन बच्चों के साथ, समय – समय पर कार्यशाला का भी आयोजन किया गया है, जैसे – गुनगुन कार्यशाला, नन्हे कदम कार्यशाला, धामाचौकड़ी, और बच्चों के साथ–साथ सेविकाओं की भी कार्यशाला और मीटिंग करवाई गयी है। बालघर आंगन ने, केन्द्र के अलावा, गाँवों में भी अपनी एक अलग पहचान

बनायी है। यही बालघर आंगन की कोशिश है और इन्ही सब बातों को एक जगह समेटने का प्रयास, ''हमार अंगना'' अखबार है।

बालघर आंगन की रूपरेखा और कार्य प्रणाली

बच्चों की एक नई दुनिया है बालघर आंगन, जहाँ वो खुलकर चहकना और सीखने–समझने की उत्सुकता महसूस करते हैं इस आंगन में वे अपनी भावना और कल्पनाओं को एक डोर से जोड़ते हैं।

कक्षा की शुरुआत

सबसे पहले बच्चों के आने के बाद बालघर आंगन में सीधा लाईन बनवाकर खड़ा कराया जाता है उसके बाद प्रार्थना करवायी जाती है। व्यायाम जुगुसा करते समय बच्चे काफी खुश दिखाई देते हैं। इस व्यायाम को गाने की लय में झूम–झूम के किया जाता है।

गोले में व्यायाम

बच्चों को एक बड़े गोले में बैठाकर अलग–अलग कराया जाता है, जैसे– पैर एवं घुटने का व्यायाम। सर को आगे पीछे हिलाना, गोले में हाथ एवं कंधे का व्यायाम, चक्की चलाना, उसके बाद आँखें बंद कर के ध्यान लगाना और कान से सुनी हुई आवाजों को बताना।

आओ कहानी सुनते हैं

बच्चों को कहानी सुनना बहुत पसंद है इसलिए कहानी को शुरु होने से पहले, वो चटाई को बिछा कर बैठ जाते हैं और कहानी को ध्यान से सुनते हैं। कहानी सुनते समय बीच में अगर उन लोगों से, कहानी में आयी बातों के बारे में पूछा जाता है, तो वो लोग अपनी तुतलाती भाषा में बहुत ही अच्छे से बोलते हैं।

ब्लॉक्स से सीखे। , ठ, ब, क,

बच्चे ब्लॉक्स को जोड़ कर। , ठ, ब, क, का आकार बनाते हैं और उसको क्रम बद्ध तरीके से सजाते हैं, सभी बच्चे एक दूसरे को ब्लॉक्स जोड़ने में मदद करते हैं। सभी बच्चे ग्रुप में मिलकर खेलते हैं।

गणित माला

इसमे बच्चों को मोती की माला के माध्यम से

गिनती सीखना और रंगों को पहचानना होता है। कभी–कभी बच्चे माला को दरवाजे की कड़ी में लगाकर बांध देते हैं। उसके बाद गिनती गिनते हैं। गिनती करते समय बच्चे संख्या भूल जाते हैं, तो उस समय संख्या कार्ड के माध्यम से गिनना शुरु करते हैं।

अक्षर से शब्द तक

बच्चों के साथ अक्षर की पहचान के लिए अलग–अलग अक्षर से शब्दों को लिखकर चित्रों की सहायता से सुंदर तरीके से प्रस्तुत किया गया है। साथ में कविता, अ से अनार, आ से आम, पढना–लिखना, मेरा काम, के माध्यम से नये–नये शब्द की जानकारी देने की कोशिश भी की गई। शब्द पोस्टर का इस्तेमाल बच्चों को अक्षर से शब्द बताने में किया गया है। शब्दों का चयन कुछ इस प्रकार से किया गया कि, इन्हें पढने के क्रम

में बच्चे जब शब्द पढ़ें तो जो आवाज़ निकलें उन अलग–अलग आवाज़ों से वे परिचित हो पायें।

बच्चे शब्दों को तो नहीं पढ़ पाते थे, लेकिन चित्रों को देखकर अपने पहले की जानकारी के आधार पर बताते थे। इन सभी पोस्टर को बालघर आंगन में लगा दिया गया है। बच्चे खुद इसके पास जाकर इन् सभी शब्दों की पहचान बताते हैं।

पैसे की पहचान

सबसे पहले बच्चों को ग्रुप में बैठाया जाता है। और उसके बाद पैसे के थैले को दिखाकर बाहर निकला जाता है बच्चे उसको गिनते हैं, और बताते हैं, ''मेरे पास इतना पैसा है।'' फिर मैं उन लोगों को अलग–अलग पैसों के नोट देती हूँ और नोट, सिक्का दोनों को दिखा–दिखा के पूछती हूँ ''कितना पैसा है''? उसी में कुछ बच्चे बताते हैं और कुछ नहीं बता पाते हैं तो उनको मैं अलग से पहचान कराती हूँ।

हिलना - डोलना मना है

ब्लॉक्स को जोड़ कर बच्चे एक पतली कतार बनाते हैं। कतार पर बारी–बारी से चलते हैं। जो उस कतार को बिना हिलाए हुए पार करते हैं, वो बच्चे पास हो जाते हैं और जो हिल जाते हैं वो आउट हो जाते हैं।

१. बालघर आंगन कार्यशाला

गुनगुन कार्यशाला :– यह कार्यशाला मुख्य रूप से सेविकाओं के लिए है।

इस कार्यशाला में सेविका और उनके बच्चों की सहभागिता होती है। यह केन्द्र पर ही करवाई जाती है। इसमें एक केन्द्र पर ही 4–5 केन्द्र के बच्चे जाते हैं और बालघर आंगन में चल रहे अलग–अलग गतिविधियों में भाग लेते हैं। इसमें सेविका गतिविधि को करती है। यह कार्यशाला 6 माह पर कराई जाती है। यह साल में दो बार होती है। यह अभी तक जमापुर, भरौली, नरेन्द्रपुर, मियाभटकन, बडहुलिया (इन सभी केन्द्रों पर) हो चुकी है।

नन्हे कदम कार्यशाला :– नन्हे कदम कार्यशाला, बच्चे, सेविका, अभिभावक के लिए मुख्य रूप से की जाती है, जहाँ बच्चों के बीच अपना खुद का बचपन याद करने को मिलता है। यह कार्यशाला प्रत्येक तीन माह पर की जाती है। इस कार्यशाला को समुदाय में ही किसी एक केन्द्र पर किया जाता है। इसमें अलग–अलग केन्द्रों से बच्चे शामिल होते हैं।

उदेश्य– बच्चों के प्रति आभिभावक की समझ को बढ़ावा देना।

यह कार्यशाला अभी तक जमापुर, मियां–भटकन, नरेन्द्रपुर, और परिवर्तन परिसर में करवाई जा चुकी है।

धामाचौकड़ी कार्यशाला– इस कार्यशाला में नये और पुराने केन्द्रों के बच्चे आते हैं और पुराने बच्चे अपनी गतिविधि का पूर्वाभ्यास करते हैं। इसमें बच्चों को गिनती के साथ व्यायाम, कविता, कहानी, एवं हफ्ते और महीने की जानकारी दी जाती है।

उदेश्य :– इसका उदेश्य है छोटे बच्चों में जो कुछ भी न बोल पाते हैं और किसी भी कार्य को न कर पाते हैं, उनकी झिझक को खत्म करने के लिए ही इस कार्यशाला को करवाया जाता है, ताकि बच्चे स्वतंत्र होकर बोल पायें। यह 3 महीने पर करवाया जाता है।

यह अभी तक बडहुलिया, बाबु–भटकन, खेम–भटकन, धर्मपुर, संथू, बंथू श्रीराम, नारायणपुर, इन सभी केन्द्रों पर करवाया जा चुका है।

मेरा अनुभव

मै मधुबाला देवी बडलिया गाँव से आती हूँ। मुझे बालघर में काम करते हुए 3 साल हो गया। अब बच्चों के साथ रहना मेरे जीवन का अहम हिस्सा बन गया है। कभी–कभी इन बच्चों को देख कर मुझे अपना बचपन याद आने

लगता है। हमारे बालघर आंगन में 3–6 साल के बच्चे आते हैं। बच्चों की भाषा बड़ों की भाषा से अलग होती है। बहुत दिन तक इन बच्चों के साथ उनकी ही भाषा में बोल कर पढ़ाना पड़ता है। बच्चे जब सेंटर से यहाँ पढ़ने आते हैं तो उनकी बोल–चाल और भाषा बिलकुल घरेलू होती है। सबसे पहले मैं उन लोगों की बोल–चाल की भाषा को सुधार करती हूँ, फिर कुछ दिन बाद बच्चे खुद से धीरे–धीरे सीख जाते हैं। बच्चों में याद करने की क्षमता भी ज्यादा होती है और बच्चे जब एक बार कविता को याद कर लेते हैं, तो दुबारा भूलते भी नहीं हैं। बच्चों को एक बार याद करने के बाद कितने भी दिन के बाद पूछा जाता है, फिर भी उनको याद रहता है। वे भूलते नहीं है। बच्चे सबसे ज्यादा बारिश के दिन में खुश रहते हैं और उन्हें बारिश में भीगना भी काफी अच्छा लगता है।

सेविका प्रशिक्षण

यह प्रशिक्षण परिवर्तन परिसर में ही सेविकाओं के साथ कराया जाता है। इसमें मुख्य रूप से सेविकाओं की सहभागिता होती है। इस बार प्रशिक्षण में सहायिका भी आई हुई थी। इसके साथ–साथ सी. डी. पी. ओ. और सुपरवाइजर भी आई हुई थीं। इसमें जो कुछ भी बताया गया वो बच्चों के विकास के लिए ही बताया गया है। जिन चीजों के बारे में सेविकाओं को जानकारी नही थी, उसकी जानकारी दी गई। और सभी लोगों को अलग–अलग ग्रुप बना कर उनको प्रश्न दिए गए, जिनके बारे में उनको लिखना था। सभी लोग अपनी समझ के अनुसार अच्छा लिखे। जिन लोगों को पता नहीं था, वो नहीं लिख पाए, तो जब ग्रुप में प्रजेनटेंशन हुआ तो उन लोगों को भी समझ में आ गया कि कैसे लिखना है और क्या लिखना है। इसमें सबसे बड़ी उपलब्धि यह थी कि सेविका लोग काफी खुश थीं। वे बोल रही थीं ''हम लोग कई बार ट्रेनिंग लिए हैं लेकिन इस तरह का पहली बार ट्रेनिंग मिला है, जो इतना सीखने को मिला है''। प्रशिक्षण के बाद सेविकाओं से फीडबैक लिया गया जो काफी अच्छा रहा।

बालघर आँगन के बच्चे